गणेश चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणपति सदगुण सदन, कविवर बदन कृपाल।

विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू। मंगल भरण करण शुभः काजू ॥ ०१ ॥

जै गजबदन सदन सुखदाता। विश्व विनायका बुद्धि विधाता ॥ ०२ ॥

वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावना। तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥ ०३ ॥

राजत मणि मुक्तन उर माला। स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥ ०४ ॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं। मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥ ०५ ॥

सुन्दर पीताम्बर तन साजित। चरण पादुका मुनि मन राजित ॥ ०६ ॥

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता। गौरी लालन विश्व-विख्याता ॥ ०७ ॥

ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे। मुषक वाहन सोहत द्वारे ॥ ०८ ॥

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी। अति शुची पावन मंगलकारी ॥ ०९ ॥

एक समय गिरिराज कुमारी। पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी ॥ १० ॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा। तब पहुंच्यो तुम धरी द्विज रूपा ॥ ११ ॥

अतिथि जानी के गौरी सुखारी। बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ॥ १२ ॥

अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा। मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥ १३ ॥

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला। बिना गर्भ धारण यहि काला ॥ १४ ॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना। पूजित प्रथम रूप भगवाना ॥ १५ ॥

अस कही अन्तर्धान रूप हवै। पालना पर बालक स्वरूप हवै ॥ १६ ॥

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना। लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना ॥ १७ ॥

सकल मगन, सुखमंगल गावहिं। नाभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ॥ १८ ॥

शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं। सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ॥ १९ ॥

लखि अति आनन्द मंगल साजा। देखन भी आये शनि राजा ॥ २० ॥

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं। बालक, देखन चाहत नाहीं ॥ २१ ॥

गिरिजा कछु मन भेद बढायो। उत्सव मोर, न शनि तुही भायो ॥ २२ ॥

कहत लगे शनि, मन सकुचाई। का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई ॥ २३ ॥

नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ। शनि सों बालक देखन कहयऊ ॥ २४ ॥

पदतहिं शनि दृग कोण प्रकाशा। बालक सिर उड़ि गयो अकाशा ॥ २५ ॥

गिरिजा गिरी विकल हवै धरणी। सो दुःख दशा गयो नहीं वरणी ॥ २६ ॥

हाहाकार मच्यौ कैलाशा। शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा ॥ २७ ॥

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो। काटी चक्र सो गज सिर लाये ॥ २८ ॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो। प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो ॥ २९ ॥

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे। प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हे ॥ ३० ॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा। पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥ ३१ ॥

चले षडानन, भरमि भुलाई। रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥ ३२ ॥

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें। तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥ ३३ ॥

धनि गणेश कही शिव हिये हरषे। नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥ ३४ ॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई। शेष सहसमुख सके न गाई ॥ ३५ ॥

मैं मतिहीन मलीन दुखारी। करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी ॥ ३६ ॥

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा। जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥ ३७ ॥

अब प्रभु दया दीना पर कीजै। अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै कर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सन्मान॥

सम्बन्ध अपने सहस्त्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ती गणेश ॥

paramsoul.com